301hi02

2

रैदास

आप संत कवि कबीर की रचनाएँ माध्यमिक स्तर पर पढ़ चुके हैं। अब आपके सामने कबीर के ही समकालीन कवि रैदास की कुछ रचनाएँ प्रस्तुत हैं।

सामूहिक जन-चेतना को जाग्रत करके, शोषित मानवता में नवीन स्फूर्ति का संचार करने वाले उच्चकोटि के विनम्र संतों में रैदास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आपने उस समय के धार्मिक आडंबरवादियों के प्रति क्षमा-भाव भी प्रकट किया। भक्ति-भाव में प्रतिक्षण आत्मविभोर रहते हुए भी रैदास ने दिव्य-द ष्टि से समय और समाज की आवश्यक माँगों को पहचान कर अपनी बात कही। संत रैदास की रचनाओं में भक्ति-भाव के दर्शन होते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- संत रैदास की निर्गुण भावधारा और विचारधारा पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- भक्ति-मार्ग में ऊँच-नीच, जाति-पाँति का भेद नहीं होता, इसे स्पष्ट कर सकेंगे;
- कवि द्वारा प्रयुक्त भाषा की शिल्पगत विशेषताओं पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

पाणी हिम भया, हिम है गया विलाय।
जो कछु था सोई भया, अब कछु कह्या न जाय।।

उपर्युक्त पंक्तियों में कबीर ने कहा है कि जिस प्रकार पानी से बर्फ बनती है और बर्फ पुनः पानी बन कर पानी में ही मिल जाती है। ठीक उसी प्रकार उन्होंने

टिप्पणी

आत्मा और परमात्मा को एक माना है। ब्रह्म ही जगत में एकमात्र सत्ता है। उसके अतिरिक्त संसार में कुछ नहीं है।

इसी प्रकार आत्मा और परमात्मा के एक हो जाने से संबंधित एक और उदाहरण यहाँ पर लिखिए –

____

____

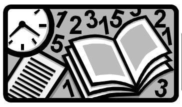

2.1 मूलपाठ

आइए, संत रैदास के कुछ पदों का आनंद लेते हुए एक बार वाचन करते हैं:

पद

1. नरहरि ! चंचल है मति मेरी,
कैसे भगति करूँ मैं तेरी।।
तूँ मोंहि देखै, हौं तोहि देखूँ, प्रीति परस्पर होई।
तूँ मोंहि देखै, तोहि न देखूँ, यह मति सब बुधि खोई।
सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना।
गुन सब तोर, मोर सब औगुन, क त उपकार न माना।।
मैं, तैं, तोरि-मोरि असमझि सौं, कैसे करि निस्तारा।
कह 'रैदास' कृष्ण करुणामय ! जै जै जगत-अधारा।।

2. जिह कुल साधू बैसनौ होइ।
बरन अबरन रंकु नहि ईसुरु बिमल बासु जानिऐ जग सोइ।।
ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ।
होइ पुनीत भगवत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ।।
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ।
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होई रस मगन डारे बिखु खोइ।।
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ।
जैसे पूरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ।।

शब्दार्थ

मति	– बुद्धि
भगति	– भक्ति
हौं	– मैं
घट	– जीव, प्राण
रमसि	– रमते हैं, निवास करते हैं
निस्तार	– छूटना
मैं, तैं	– अपना, पराया
बरन अबरन	– सवर्ण अवर्ण
तजे	– त्यागना, छोड़ना
बिखु	– विष
खोई	– खुही (गन्ने का रस निकालने के बाद बचा हिस्सा)
जिनि	– जिसने
ईसुरु	– संपन्न
पुरैन पात	– कमल का पत्ता
बिमल	– पवित्र
बासु	– गंध
धनि	– धन्य है
गाउ	– गाँव
ठाउ	– स्थान, जगह
लोई	– लोग, चमक, ज्वाला

3. प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै 'रैदासा'।

दोहे

1. हरि सा हीरा छाड़ि करि करैं आन की आस।
ते नर जमपुरि जाइसी सति भाषै रैदास।।

2. रैदास कहै जाकै रिदै रहै रैंनि दिन राम।
सो भगता भगवान समि क्रोध न व्यापै कांम।।

3. जा देषें घिण उपजै नरक कुंड है वास।
प्रेम भगति तैं उधरे प्रगट जन रैदास।।

शब्दार्थ

बास – महक, सुगंध
घन – बादल
जोति – ज्योति
बरै – जलती है
जमपुरि – यमपुर/मृत्यु का घर
सति – सच
भाषै – कहते हैं
रिदै – हृदय
समि – समान
व्यापै – फैलना
देषें – देखना
घिण – घृणा
वास – रहना

2.2 आइए समझें

अंश - 1

पद - 1

आइए एक बार पहले पद को पुनः पढ़ लेते हैं।

प्रसंग

प्रस्तुत पद में कवि रैदास ने ईश्वर के निराकार रूप का वर्णन किया है, जिसका न आदि है न अंत। दूसरी ओर भक्त माया से बँधा रहने के कारण अत्यंत चंचल रहता है। भक्त की इसी विवशता का यहाँ वर्णन किया गया है।

व्याख्या

हे ईश्वर ! मेरी बुद्धि अत्यंत चंचल है, आप ही बताएँ कि मैं आपकी भक्ति किस प्रकार करूँ? अर्थात मैं माया-जाल में फँसा होने के कारण सदैव किसी-न-किसी मोह बंधन में बँधा रहता हूँ जिससे मैं पूर्णतः एकाग्र होकर ईश्वर की भक्ति में लीन नहीं हो पा रहा हूँ। यही मेरी विवशता है जिसे मैं आपके सम्मुख व्यक्त कर रहा हूँ।

नरहरि ! चंचल है मति मेरी,
कैसे भगति करूँ मैं तेरी।।
तूँ मोंहि देखै, हौं तोहि देखूँ, प्रीति परस्पर होई।
तूँ मोंहि देखै, तोहि न देखूँ

ईश्वर निराकार है, अतः कवि उस निराकार ब्रह्म को संबोधित कर कहता है कि तुम मुझे देख सकते हो क्योंकि तुम्हारी द ष्टि सर्वव्यापी है किंतु मैं तुम्हें नहीं देख सकता क्योंकि तुम्हारा कोई रूप नहीं है तो भला, प्रीति कैसे हो? यद्यपि मनोवैज्ञानिक नियम तो यही है कि जब हम एक-दूसरे को देखते हैं, आकर्षण बढ़ता है, तभी प्रीति होती है। अतः किसी को बिना देखे प्रीति कैसे हो सकती है। इसलिए बिना तुम्हें देखे प्रीति करना तो चाहता हूँ किंतु मति भ्रमित हो जाती है, प्रीति नहीं कर पा रहा हूँ। तुम सबके हृदय में सदैव विराजमान हो, तुम्हारे में गुण ही गुण हैं और मुझ जैसे माया-मोह में फँसे जीव में अवगुण ही अवगुण भरे हैं, यहाँ तक कि तुम्हारे द्वारा किए गए उपकार भी मुझ जैसा अवगुणी समझ नहीं पाता। मैं अपनी नासमझी के कारण सदैव अपने-पराए, हमारे-तुम्हारे की माया में फँसा रहता हूँ। भला तुम ही बताओ कि मैं अब उस द्वंद्व से कैसे छुटकारा पाऊँ ? रैदास जी कहते हैं, हे करुणामय कृष्ण ! यह सारा संसार तुम्हारे ही सहारे चल रहा है, मैं तुम्हारी जय-जयकार करता हूँ।

टिप्पणी

संत रैदास भारतीय अद्वैत वेदांत के समर्थक थे जिनके अनुसार आत्मा और ब्रह्म दोनों ही हैं दोनों में कोई अंतर नहीं है। आत्मा माया में लिप्त होने के कारण ही जीव कहलाती है। जीव माया में लिप्त रहता है और नाशवान है, चंचल है, अस्थिर है। ब्रह्म निर्गुण है, अचल है, अटल है। इसी भाव की झाँकी रैदास के इस पद में दिखाई देती है जब वे कहते हैं –

सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना।

इसी प्रकार के विचार कबीर के इस दोहे में भी द्रष्टव्य हैं –

सो साईं तन में बसै, भ्रम्यो न जणैं तास।
कहैं कबीर विचार करि जिन कोई खोजें दूरि।।

उपर्युक्त पद दास्य भाव की भक्ति का सुंदर उदाहरण है।

पद - 2

आइए, अब दूसरा पद हम सस्वर पढ़ते हैं –

प्रसंग

इस पद द्वारा संत रैदास यह प्रतिपादित करना चाहते हैं कि भक्ति मार्ग में जाति-पाँति का कोई बंधन नहीं होता। नीच कही जाने वाली जाति में जन्म लेने वाला व्यक्ति जिसके हृदय में प्रेम भक्ति का संचार है, वह उस ब्राह्मण से कहीं अधिक अच्छा है, जो भगवान की भक्ति के प्रति उदासीन है।

व्याख्या

संत रैदास भक्ति की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि जिस कुल में ईश्वर-भक्त जन्म ले, वही कुल उच्च और पवित्र कुल माना जाता है। चाहे वह सवर्ण कुल हो या

यह मति सब बुधि खोई।
सब घट अंतर रमसि निरंतर
मैं देखन नहिं जाना।
गुन सब तोर, मोर सब औगुन,
क त उपकार न माना।।
मैं, तैं, तोरि-मोरि असमझि सौं,
कैसे करि निस्तारा।
कह 'रैदास' कृष्ण करुणामय !
जै जै जगत-अधारा।।

अवर्ण, गरीब हो या अमीर। कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर की द ष्टि में सच्चा भक्त या ईश्वर का प्रिय व्यक्ति वही है जो पुण्यात्मा है, अच्छे कर्म करने वाला है और सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति करता है। इसी भाव को एक स्थान पर रहीम ने इस प्रकार व्यक्त किया है –

ऊँचे कुल का जनमियाँ करनी ऊँच न होय।
सुबरन कलस सुरा भरा साधु निंदा सोय।।

आगे की पंक्तियों में कवि अपने उपर्युक्त विचार की पुष्टि में कहता है कि चाहे व्यक्ति किसी भी वर्ग अथवा जाति का क्यों न हो यदि वह सच्चे मन और पवित्र भाव से भगवान का भजन करे, तो उसे स्वयं तो मुक्ति मिलती ही है साथ ही उसके दोनों कुल (माता-पिता) मुक्ति पा जाते हैं। कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान के भजन में बड़ी शक्ति है। धन्य है वह धरती, धन्य है वह स्थान, धन्य हैं उसके पवित्र परिवार के लोग, जिसमें एक सच्चा भक्त जन्म लेता है।

जिन भक्तों ने ईश्वर प्रेम रूपी रस का पान कर लिया है, उन्हें सांसारिक रस में कोई आनंद नहीं आता। वह तो अपने प्रेम रूपी रस में ही मगन हो सांसारिक माया रूपी विषाक्त आकर्षणों को खोई के समान फेंक देता है।

जिह कुल साधू बैसनो होई।
बरन अबरन रंकु नहि ईसुरु बिमल बासु जानिए जग सोई।।
चंडार मलेछ मन सोइ।
ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम होइ पुनीत भगवत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ।।
धनि सु गाउ धनि सो ठाउ
धनि पुनीत कुटुंब सभ लोइ।
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होई रस मगन डारे बिखु खोइ।।
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ।
जैसे पूरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ।।

कवि भक्त की महत्ता बताते हुए कहता है कि पंडित, वीर, छत्रपति राजा कोई भी क्यों न हो, वह भक्त की बराबरी नहीं कर सकता। भक्त तो इन सबसे ऊपर है। कवि रैदास कहते हैं कि इस संसार में उसी तरह रहना चाहिए जैसे जल में कमल का पत्ता रहता है, जो जल में ही पैदा होता है और जल से ही प्राण-शक्ति ग्रहण करते हुए भी जल की एक बूँद अपने ऊपर ठहरने नहीं देता और पानी के ऊपर ही तैरता रहता है। इसी प्रकार मनुष्य को भी संसार में पैदा होकर भी, इसी में रहते हुए संसार से निरपेक्ष रह कर भक्ति में लीन रहना चाहिए।

टिप्पणी

संत रैदास अत्यंत सहिष्णु संत थे, अतः जिस बात को बुरा भी मानते थे, उसे बड़ी सहिष्णुता से समझाते थे। जैसे भक्ति के क्षेत्र में जाति-पाँति का भेदभाव वे भ्रमपूर्ण मानते थे। फिर भी वर्णाश्रम व्यवस्था पर टीका-टिप्पणी न करके, उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भक्ति-मार्ग पर चलने वाला हर व्यक्ति बराबर है, चाहे वह किसी जाति या व्यवसाय का हो। नीच से नीच व्यक्ति भी अपनी अनन्य भक्ति के कारण परम पद को प्राप्त कर सकता है। यद्यपि जाति व्यवस्था की जड़ें भारतीय समाज के बहुत नीचे स्तर तक व्याप्त हैं। किंतु स्वातंयोत्तर भारत में अनेक संवैधानिक प्रयासों से ये जड़ें हिलाई जा चुकी हैं और वर्तमान स्थिति में जाति की सीमा नगण्य है– वस्तुतः मनुष्य का कर्म ही महत्त्वपूर्ण है। द ष्टव्य है कि आज से हजारों वर्ष पूर्व रैदास जैसे संत कवि ने मनुष्य को इस संकीर्णता से ऊपर उठ कर ईश्वर प्रेम का पाठ पढ़ाया था, जो मूल रूप से हमें नैतिकता की ओर ले जाता है।

ईश्वर के दरबार में सब बराबर हैं, हम सब उसी की संतान हैं। कवि के इसी विचार की पुष्टि में निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य है –

"एक बिंदु से ब्रह्म रच्यौ है, को बाहमन को सूद।"

कवि की *"जिनि पिआ सार रसु, तजे आन रस होइ। रसमन डारै बिखु खोई,"* पंक्ति में 'बिखु खोई' में **रूपक अलंकार** है। सार-रस भक्ति रूपी रस की ओर इंगित करता है। यहाँ आन रस, सांसारिक आकर्षणों की ओर संकेत करता है। 'रस मगन' से तात्पर्य भक्ति के परम रस से प्राप्त आनंद से है।" जिसे इस रस का आनंद मिल जाए वह व्यक्ति सांसारिक आनंदों को विष के समान समझ कर खोई की तरह फेंक देगा।

पाठगत प्रश्न 2.1

दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कवि अपनी बुद्धि को चंचल कहता है, क्योंकि बुद्धि

   (क) माया-मोह के चक्कर में पड़ी रहती है

   (ख) ईश्वर के रूपाकार की कल्पना नहीं कर पाती

   (ग) ईश्वर-भक्ति में लीन नहीं हो पाती

   (घ) ईश्वर को देख नहीं पाती

2. कवि ईश्वर से प्रेम न कर पाने में अपने को असमर्थ पा रहा है, क्योंकि

   (क) सुंदर रूप बिना देखे प्रेम नहीं होता

   (ख) ईश्वर का कोई रूप नहीं जिससे प्रेम किया जाए

   (ग) कवि की बुद्धि चंचल है

   (घ) ईश्वर में आकर्षण की कमी है

3. ईश्वर के सम्मुख ऊँच-नीच, अवर्ण-सवर्ण का कोई भेद नहीं होता, क्योंकि

   (क) सभी प्राणियों में लाल रक्त का संचार होता है

   (ख) सभी प्राणियों में ईश्वर निवास करता है

   (ग) ईश्वर के सम्मुख सभी प्राणी समान हैं

   (घ) सभी ईश्वर की भक्ति समान भाव से करते हैं

4. सार रस से कवि का तात्पर्य है –

   (क) भक्ति रस   (ग) ज्ञान रस

   (ख) प्रेम रस   (घ) आन रस

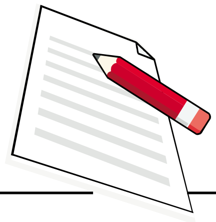

अंश - 2

संकेत पाठ

पद - 3

आइए ! इस पद को एक बार फिर ध्यान से पढ़ लेते हैं।

इसको पढ़ने के बाद आपके मन में कुछ जिज्ञासाएँ, कुछ भाव-विचार उठे होंगे। आइए उन पर विचार करें।

- कवि प्रभु के समक्ष स्वयं को समर्पित करता हुआ ईश्वर को चंदन और स्वयं को पानी की उपमा देता है। चंदन की सुगंध भक्त के शरीर के अंग-प्रत्यंग में कैसे व्यापत है, सोचिए ! कल्पना कीजिए पानी मिलाकर कर चंदन के घिसे जाने की।
- इसी भाँति ईश्वर बादल, चाँद, दीपक और मोती है। भक्त ने स्वयं को क्रमशः मोर, चकोर, बाती और धागा के रूप में व्यक्त किया है। उन सबकी तुलना करते हुए कवि ने भक्त और भगवान के अन्यतम संबंधों की चर्चा कर डाली।
- इस पद में दास्य भक्ति का सुंदर रूप दिखाई देता है। भक्त का भगवान से आत्म निवेदन है कि वह जैसा भी है भगवान के चरणों में पूर्णतः समर्पित है। उसका अपना कुछ नहीं। जो कुछ है वह ईश्वर का प्रकाश और प्रसाद है।

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै 'रैदासा'।

टिप्पणी

संत रैदास ने उपुर्यक्त पद में ईश्वर और दास का अटूट संबंध व्यक्त करते हुए आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण भाव की अभिव्यक्ति की है। भगवान के प्रति सच्चा प्रेम ही सर्वोपरि है और भक्त को निरंतर भगवान की उपासना में लगे रहना चाहिए। भक्त पपीहे की भाँति है, जो स्वाति की बूँद रूपी ईश्वर के लिए एकाग्र होकर प्रतीक्षा करता है। भक्त और भगवान का यह मिलन चंदन और पानी तथा सोने और सुहागे की भाँति होना चाहिए। इस प्रकार यह प्रेम आत्म-निवेदन से पूर्ण है जिसमें भक्त स्वयं को परमात्मा के चरणों में पूर्णतः विलीन कर देना चाहता है।

यहाँ संत रैदास ने स्वयं को भगवान का दास माना है। इसे दास्य भाव की भक्ति कहते हैं। जहाँ भक्त अपना सर्वस्व अपने प्रभु को समर्पित कर देता है, वहाँ उसका कुछ भी नहीं रह जाता। वह अपने पास जो कुछ भी श्रेष्ठ और सुंदर पाता है, वह सब उसी ज्योतिमान का प्रकाश और प्रसाद है।

कवि सिद्ध करना चाहता है कि भक्त की महत्ता तभी बढ़ती है, जब ईश्वर का संपर्क मिलता है। दोनों एक-दूसरे से अनन्य रूप से जुड़े हुए हैं। जब भक्त में 'मैं' की भावना समाप्त हो जाती है, तभी वह ईश्वर के पास पहुँच पाता है।

सामान्यतः 'सोने में सुहागा' का प्रयोग मुहावरे के अर्थ में भी किया जाता है, जिसका अर्थ है किसी विशेष वस्तु में दूसरी वस्तु के मेल से उसमें विशिष्ट गुण

का समावेश हो जाना। भाव यह है कि सोने जैसी बहुमूल्य वस्तु जब सुहागा (जो एक प्रकार का रसायन है) से मिलती है, तो वह और भी निखर जाती है और उसकी दमक बढ़ जाती है और सुहागे का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब भक्त और भगवान का भेद समाप्त हो जाए, तभी भक्ति सार्थक होती है।

कवि ने उपर्युक्त पद में द ष्टांत अलंकार का सुंदर प्रयोग किया है जैसे– दीपक बाती आदि। *'प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा जैसे चितवत चंद चकोरा'* पद का साम्य भाव कवि रहीम की निम्नलिखित पंक्तियों में द्रष्टव्य है –

तै रहीम मन आपुनो, कीन्हों चारु चकोर,
निसि बासर लाग्यौ रहै, चारु चंद की ओर।।

उपमा

जहाँ पर एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ **उपमा अलंकार** होता है। जैसे, किसी सुंदर स्त्री के मुख की तुलना चंद्रमा से की जाए, तो वहाँ पर उपमा अलंकार होता है। इसमें जिस वस्तु की तुलना (स्त्री का मुख) की जाती है, उसे 'उपमेय' तथा जिस वस्तु से (चंद्रमा) तुलना की जाती है, उसे 'उपमान' कहते हैं।

किंतु यदि यहीं पर स्त्री के मुख की तुलना किसी ऐसी वस्तु से की जाती कि मुख और उस वस्तु में भेद करना मुश्किल हो जाता है, तब यहाँ **रूपक अलंकार** होता क्योंकि जहाँ पर उपमेय और उपमान में आरोप दिखाई देता है, वहाँ पर **रूपक अलंकार** होता है। जैसे इसी पाठ के दूसरे पद में 'बिखु खोई' में रूपक है। आप समझ चुके हैं कि यहाँ रूपक इसलिए है यहाँ पर उपमेय 'बिखु' अर्थात विष और उपमान 'खोई' में इतनी समानता दिखाई गई है कि दोनों एक ही हैं।

द ष्टांत

जहाँ पर उपमेय तथा उपमान में बिंब-प्रतिबिंब का भाव झलकता हो, वहाँ पर **द ष्टांत अलंकार** होता है। *''कान्हा क पा कटाक्ष की करै कामना दास। चातक चित में चेत ज्यों स्वाति बूँद की आस।''* इसमें क ष्ण की आँखों की तुलना स्वाति नक्षत्र के पानी से तथा सेवक अथवा भक्त की तुलना चातक पक्षी से की जाती है। किंतु यहाँ उपमा अलंकार न होकर द ष्टांत अलंकार होगा, क्योंकि तुलना उदाहरण देते हुए की गई है अर्थात द ष्टांत के साथ की गई है।

पाठगत प्रश्न 2.2

दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए–

1. चकोर चाँद को क्यों देखता रहता है ?
   (क) चाँद उसे देखने में सुंदर लगता है
   (ख) चाँदनी रात में ही उसका चकोरी से मिलन होता है

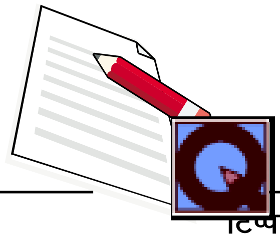

टिप्पणी

(ग) चाँद की चाँदनी से उसे शीतलता मिलती है

(घ) चाँद और चकोरी में कोई अंतर नहीं है

2. इस पद में संत रैदास ने ईश्वर की उपमा कई उपमानों से दी है तथा भक्त-भगवान के संबंध को कई रूपों में प्रस्तुत किया है। नीचे इसका एक उदाहरण दिया जा रहा है, अन्य का उसी पर आधारित उपयुक्त मिलान कीजिए :

ईश्वर	**भक्त**
चंदन	बाती
घन	सुहागा
दीपक	दास
मोती → धागा	चकोर
स्वामी	पानी
चाँद	मोर
सोना	धागा

अंश - 3

अब तक आपने कबीर, रहीम, तुलसीदास आदि द्वारा लिखे दोहे पढ़े होंगे। दोहा छंद में दो पंक्तियाँ होती हैं। किंतु *'ये देखन में छोटे लगें घाव करें गंभीर'* की कहावत को चरितार्थ करते हैं।

इन दोहों को आइए एक-एक करके पढ़ लेते हैं।

दोहा - 1

प्रसंग

प्रस्तुत सभी दोहों में कवि रैदास ने ईश्वर भक्ति की महिमा का गुणगान किया है।

व्याख्या

हरि सा हीरा छाड़ि करि।
करैं आन की आस।
ते नर जमपुरि जाइसी
सति भाषै रैदास।।

कवि रैदास का सत्य कथन है कि ईश्वर-भक्ति जैसा हीरा बड़े यत्नों से मिलता है। उसे छोड़ने से किसी अन्य सांसारिक माया-मोह की ओर चित्त लगाने वाला व्यक्ति यमलोक ही जाएगा। उसे स्वर्ग या इस संसार से मोक्ष की कामना नहीं करनी चाहिए अर्थात् संसार में केवल ईश्वर-भक्ति ही ऐसी अमूल्य वस्तु है कि उसके सामने सभी सांसारिक वस्तुएँ फीकी हैं। यदि हम सांसारिक माया-मोह में डूबे रहे, तो निश्चित ही म त्यु के पश्चात् हमारा पुनः-पुनः इस लोक में आवागमन बना रहेगा अर्थात् बार-बार प थ्वी पर जन्म लेना होगा। संत रैदास ठीक कहते हैं कि यदि मुक्ति प्राप्त करनी है और बार-बार जन्म लेने के चक्र से बचना है, तो उसका एक ही रास्ता है– ईश्वर की भक्ति।

टिप्पणी

क्या आप बता सकते हैं *'हरि सा हीरा'* में कौन-सा अलंकार है ? हाँ, आप उपमा अलंकार के बारे में जानते हैं। यहाँ उपमा अलंकार ही है, क्योंकि यहाँ ईश्वर की तुलना हीरे से की गई है।

ऐसा माना जाता है कि धातुओं में सबसे मूल्यवान धातु हीरा है। अतः हरि की भक्ति यदि हीरे के समान है, तो अन्य सांसारिक वस्तुएँ उसके सामने तुच्छ हैं।

इसके साथ ही ईश्वर-भक्ति में वह शक्ति है, जिसके द्वारा भक्त को मोक्ष प्राप्त होता है, जबकि अन्य सांसारिक वस्तुओं के मोहजाल में बँधने पर मानव की शक्ति क्षीण होती जाती है। वह उसी में उलझता जाता है और अंत में म त्यु को प्राप्त होता है। इसी सत्य की ओर कवि का संकेत है।

संत रविदास ने मनुष्य योनि को सर्वश्रेष्ठ माना है और उनके अनुसार यही जन्म भगवद् भक्ति और साधना के लिए स्वर्णिम अवसर है। इसी देह से परलोक की प्राप्ति होती है अर्थात् मानव शरीर के माध्यम से ही अधिक-से-अधिक भक्ति की जा सकती है और ईश्वर के निकट पहुँचा जा सकता है, मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

दोहा - 2

प्रसंग

इस दोहे में भक्ति की महत्ता बताई गई है। सदाचरण के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि को त्याज्य (त्यागने योग्य) माना गया है।

रैदास कहै जाकै रिदै
रहै रैनि दिन राम।
सो भगता भगवान समि क्रोध न
व्यापै काम।।

व्याख्या

संत रैदास के विचार से जिसके हृदय में रात-दिन राम का नाम है, राम का वास है, वह भक्त भगवान के समान है। ऐसे भक्त को काम, क्रोध आदि की माया नहीं सताती क्योंकि वह इन सभी जंजालों से अपने को मुक्त कर, स्वयं को नियंत्रित करके ईश्वर भक्ति के परम पद पर पहुँच चुका है। कहने का तात्पर्य यह है कि भक्ति-मार्ग पर चल कर भक्त भगवान की श्रेणी में पहुँच जाता है, यह भक्ति की महिमा है। अतः इस उच्च पद पर पहुँचने के लिए मानव का जीवन में भक्ति के मार्ग पर चलना ही श्रेयस्कर है।

टिप्पणी

ऐसा माना जाता है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह सांसारिक माया-मोह हैं, जब तक मनुष्य इन बंधनों में उलझा रहता है, तब तक वह सच्ची भक्ति नहीं कर पाता। एक बार वह भक्ति के सच्चे मार्ग पर चल पड़े, तब इनकी माया उसे नहीं सताएगी क्योंकि तब तक भक्त अपने ईश में विलीन हो चुका होगा।

यह भक्ति साधना की उच्चतम स्थिति है, जहाँ भक्त ब्रह्म को पहचान कर उसमें एकाकार हो जाने का अनुभव करने लगता है और तब वह सांसारिक आकर्षणों से बहुत दूर चला जाता है।

दोहा - 3

प्रसंग

रैदास ने समाज में प्रचलित जाति प्रथा के कारण कुछ वर्णों में व्याप्त हीन-ग्रंथि को उखाड़ फेंकने के लिए भक्ति का सहारा लिया। समाज के आडंबरवादियों को उन्होंने यह समझाने की कोशिश की कि मात्र किसी जाति विशेष में जन्म लेने से कोई व्यक्ति ऊँचा-नीचा नहीं हो सकता। उसके बड़प्पन की कसौटी उसका चिंतन, आचरण और कर्म है। उसी ओर संकेत से वह इस दोहे में अपने विचार प्रकट करते हैं।

व्याख्या

जा देखें घिण उपजै
नरक कुंड है वास।
प्रेम भगति तैं उधरे
प्रगट जन रैदास।।

सामाजिक द ष्टि से नीची कही जाने वाली जातियाँ, जिन्हें देखकर ही उच्च वर्ग के लोग घ णा से मुख मोड़ लेते हैं, वे लोग जिन बस्तियों में रहते हैं वे नरक के समान गंदी हैं – किंतु उन्हीं में से कोई भी मनुष्य ईश्वर भक्ति और प्रेम के बल पर अपने चिंतन और आचरण से प्रभु का भक्त भी बन सकता है। उदाहरण देते हुए कहते हैं कि रैदास स्वयं भक्ति कर इससे उबर चुके हैं अर्थात् रैदास (जिनको निम्न जाति में पैदा होने का बोध सदा ही सताता रहा) निम्नकुल में पैदा होने के कारण सदैव घ णा के पात्र रहे, लोगों की द ष्टि में उनका निवास नरक कुंड था (क्योंकि वहाँ दिन-रात चमड़े की सड़ाँध से वातावरण दूषित रहता था) वहीं रहकर स्वयं रैदास ईश्वर-भक्ति के बल पर समाज के लिए आदर्श बनकर प्रकट हुए। कवि के कहने का यही तात्पर्य है कि – *''जाति–पाँति पूछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।''*

टिप्पणी

छोटी जाति में जन्म लेकर भी रैदास ने उच्चतम संस्कार विकसित किए तथा वे अपने युग के महामानव बने। वे कहते हैं कि

जाति ओछा, पाँति ओछा, ओछा जनमु हमारा।
राजा राम की सेवा न कीन्हीं कहि रविदास चमारा।।

इस प्रकार रैदास ने अपने कुल, जाति और जन्म पर स्वाभिमान प्रकट किया है। इन्होंने आचरण और कर्म की गरिमा की केवल बात ही नहीं की, बल्कि अपना उदाहरण स्वयं प्रस्तुत किया और सामाजिक चेतना को एक नवीन दिशा दी। रैदास ने ज्ञान के सहारे ही अनन्य प्रेम की सीढ़ी चढ़कर ब्रह्म को प्राप्त किया।

वह मानते हैं कि माया-मोह से घिरा हुआ व्यक्ति घ णा का पात्र होता है। उसका निवास भी नर्क के समान प्रतीत होता है। किंतु यदि इसी व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम पैदा हो जाए, उसके ज्ञान-चक्षु खुल जाएँ, वह ईश्वर को पहचान ले, तो वह सच्चा भक्त कहला सकता है।

पाठगत प्रश्न 2.3

उचित विकल्प का चयन कर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए:

1. मनुष्य के पास काम-क्रोध से मुक्ति प्राप्त करने का एक मात्र रास्ता है –

   (क) स्वयं पर नियंत्रण (ग) ईश्वर का स्मरण करना

   (ख) उच्चकुल में जन्म लेना (घ) सांसारिक माया में फँसे रहना

2. कवि के अनुसार नरक कुंड का आशय क्या है?

3. सच्ची भक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2.3 शिल्प सौंदर्य

संत रैदास आचरण में मूलतः संत थे और साधना में लीन रहते थे। उनकी भक्ति सरल और सहज थी। आप पढ़ चुके हैं कि रैदास निराकर ब्रह्म में ही विश्वास रखते थे और उन्हें ही अपना ईश्वर मानते थे उन्होंने परमात्मा को क ष्ण, राम, गोविंद आदि के नाम से स्मरण किया। वे विद्वान नहीं थे किंतु उनकी वाणी का स्रोत वह स्थान था, जहाँ मात्र साधक ही पहुँच सकता है।

संत रैदास की काव्य-रचना का उद्देश्य साहित्य-स जन बिल्कुल नहीं था। वे पहले भक्त थे बाद में कवि। फिर भी अपने विचार व्यक्त करने के लिए उन्होंने जिस काव्य की रचना की वह संत परंपरा के किसी कवि की तुलना में कम नहीं थी। उनमें काव्य प्रतिभा थी इसी कारण जनता के समक्ष जो विचार वे रखना चाहते थे उसमें पूर्णतः सफल रहे। अपनी अनुभूतियों के संप्रेषण के लिए उन्होंने भावनाओं को सहज रूप में लिया और अपनी रचनाओं में व्यंजनाओं का प्रयोग किया है, जैसे –

हरि सा हीरा छांड़ि करि करैं आन की आस।
ते नर जमपुरि जाइसी सति भाषै रैदास।।

संत रविदास ने दोहों और पदों में काव्य रचनाएँ कीं। इनके काव्य में रसानुभूति और आध्यात्मिक विचारों की झलक है। ये सभी पद गेय हैं अर्थात् इन्हें गाया जा सकता है और ये विभिन्न राग-रागनियों में बँधे हुए हैं।

वैराग्य और साधना से युक्त भाषा में विनम्रता और आत्मसम्मान का भाव है। सभी पद ब्रजभाषा में रचित हैं किंतु उनमें पूर्वी अवधी के शब्दों के प्रयोग, जैसे – मति, बुछि, गन, तोर आदि से अवधी का पुट आ गया है। खड़ी बोली की विभक्तियों तथा उर्दू-फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग मिलता है, जैसे – गरीब, निवाजु आदि स्थानीय शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है, जैसे – सूँ। सब मिलाकर रैदास की भाषा भावों के साँचे में ढली है।

रैदास ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए उपमा, रूपक, द ष्टांत आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।

रूपक तो बहुत बन पड़े हैं, जैसे –

जिनि पिआ सार रस
तजै आनु रस होई रसमगन डारे बिखु खोई।

'सार रस' और *'बिखु खोई'* में रूपक अलंकार है।

इसी प्रकार – *'हरि सा हीरा छाँड़ि करि करैं आन की आस।'* में *'हरि सा हीरा'* में उपमा अलंकार है।

रैदास ने भक्ति के क्षेत्र में 'अष्टांग साधना' को अपनाया, जिसमें सदन, सेवा, सत्त, नाम, ध्यान, प्रणति, प्रेम तथा विलय को अंग के रूप में स्वीकार किया। सदन का भाव ग हस्थ जीवन से है। इसके साथ ही साधना के मार्ग पर बढ़ने में सेवा का महत्त्व है। संत ने साधना मार्ग दिखाया, ईश्वर के नाम की पहचान हुई और ईश्वर में ध्यान लगाने से उसके प्रति आत्मसमर्पण का भाव उत्पन्न होता है। इसे ही रैदास ने प्रणति कहा। इसके बाद साधक का ईश्वर के प्रति प्रेम इतना प्रगाढ़ हो जाता है कि वह भगवान से तादात्म्य की स्थिति में पहुँच जाता है। यही है विलय की दशा। इस प्रकार रैदास की वाणी का आधार उनकी वैयक्तिक अनुभूति है, जो अंतर्मन को अनायास छू लेने वाली स्वाभाविक शब्दावली में व्यक्त हुई है।

आइए, दोहे के बारे में और जानकारी प्राप्त करें।

मध्यकालीन कविता में दोहा छंद अत्यंत लोकप्रिय रहा है। दोहे में दो-दो चरणों के दो दल अर्थात चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों अर्थात् पहले और तीसरे चरण में 13–13 तथा सम चरणों में अर्थात दूसरे और चौथे चरण में 11–11 मात्राएँ होती हैं तथा अंत में लघु (।) अवश्य होना चाहिए। दूसरे और चौथे चरण तुकांत (तुक के साथ अंत होने वाले शब्द, जैसे–काज-राज) होने चाहिए।

उदाहरण के लिए यह दोहा देखें:

S । ।।। ।। S । ।। ।। ।S। ।। S ।
धूर धरत नित शीश पर, कहु रहीम किहि काज।
पहला चरण (13 मात्राएँ) दूसरा चरण (11 मात्राएँ)

।। ।।।।SS ।S S S।। ।।S।
जिहि रज मुनि पत्नी तरी, सो ढूँढ़त गजराज।।
तीसरा चरण (13 मात्राएँ) चौथा चरण (11 मात्राएँ)

अब आप सोच रहे होंगे कि ये मात्राएँ क्या होती हैं? तो ह्रस्व और दीर्घ वर्णों के बारे में तो आप जानते ही हैं। जहाँ पर ह्रस्व वर्ण होता है वहाँ एक मात्रा का प्रयोग करते हैं तथा इसे 'लघु' कहते हैं। लघु का संकेत '।' होता है। 'धरत' शब्द में तीन लघु वर्ण हैं 'ध', 'र' और 'त' इसलिए इनकी मात्राओं का क्रम '।।।' होता है। जहाँ पर दीर्घ स्वर का प्रयोग होता हैं, वहाँ पर दो मात्राएँ होती हैं। इसे 'गुरु' कहते हैं। गुरु का संकेत 'S' होता है। संयुक्त वर्णों में पहले आने वाला वर्ण भी गुरु होता है।

टिप्पणी

जैसे रहीम में 'ही' दीर्घ है, इसलिए इसकी दो मात्राएँ होंगी। इसी प्रकार पत्नी में 'प' गुरु होगा, क्योंकि संयुक्त शब्द का पहला वर्ण है, इसलिए इसकी भी दो मात्राएँ होंगी।

पाठगत प्रश्न 2.4

1. उपमा, रूपक तथा द ष्टांत अलंकार का एक-एक पठित उदाहरण यहाँ लिखिए।

   (क) **उपमा :** ....   (ग) **द ष्टांत :** ....

   (ख) **रूपक :** ....

2. निम्नलिखित की दो-दो विशेषताएँ लिखिए–

   (क) **लघु**   (ख) **गुरु**

उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

3. 'हरि सा हीरा छाँड़ि करि, करैं आन की आस' में कुल कितनी मात्राएँ हैं?

   (क) 13   (ग) 24

   (ख) 16   (घ) 22

2.4 आइए, स्वयं पढ़ें

अभी तक आपने संत कवि रैदास के तीन पद पढ़े, उन्हीं की समकालीन कवयित्री सहजोबाई द्वारा रचित एक पद दिया जा रहा है। इसका वाचन करें।

पद

ज्यों ज्यों राम नाम ही तारै।
जान अजान अगिन जो छूवै, वह जारै पै जारै।।
उल्टा सुलटा बीज गिरै ज्यों, धरती माही कैसे।
उपजि रहै निहचै करि जानौ, हरि सुमिरन है ऐसै।।
वेद पुरानन में मथि काढ़ा, राम नाम तत सारा।
तीन कांड में अधिक जानौ, पाप जलावन हारा।।
हिरदा सुद्ध करै बुधि निरमल, ऊँची पदवी देवैं।
चरनदास कहै 'सहजो बाई', बाधा सब हरि लेवैं।।

शब्दार्थ

तारै – मोक्ष दिलाना
अगिन – अग्नि
जारै – जलना
निहचै – निश्चय ही
मथि – मथकर
काढ़ा – निकाला
तत – तत्व
तीन कांड – तीनों लोक

आपने पढ़ा

भक्त कवियों की वाणी से ईश-महिमा उनकी वंदना से ही मुखरित है।

- राम नाम की महिमा ऐसी है कि जाने-अनजाने आप कभी भी कहीं भी उसका स्मरण कर लीजिए– आप पापमुक्त हो जाएँगे।
- धरती पर गिरे बीज की उत्पादकता में किंचित दोष नहीं आता, चाहे किसी भी रूप में उसे बिखेर दें। ठीक उसी प्रकार तो ईश्वर स्मरण भी उतना ही महिमाकारी है।
- तीनों लोकों के पापों का हरण करने वाला राम नाम ही है।

आशा है आपको इन बिंदुओं से पद को ठीक से समझने में सहायता मिली होगी।

आइए, अब कबीर का एक दोहा पढ़ते हैं।

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय।।"

- चाहे संत कवि हों, चाहे निर्गुण या सगुण भक्त कवि, सभी ने एक स्वर से ईश्वर-प्रेम की महत्ता सिद्ध की है।
- ईश्वर भक्ति, ईश्वर प्रेम ही व्यक्ति को पंडित कहलाने का अधिकारी बनाता है। वेद-पुराण या मोटी-मोटी पुस्तकें पढ़ लेना नहीं।

शब्दार्थ

पोथी – पुराण
मुआ – मरण
आखर – अक्षर
प्रेम – ईश्वर भक्ति से तात्पर्य

पाठगत प्रश्न 2.5

पढित अंश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए:

1. अग्नि और धरती पर गिरे बीज की तुलना किससे की गई है ?

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चुनाव कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

2. तीन कांड से तात्पर्य है –
   (क) रामचरित मानस के तीन कांड (ग) तीन दशाएँ
   (ख) तीनों लोक (धरती, आकाश, पाताल) (घ) स्वर्ग लोक
3. शुद्ध हृदय और निर्मल बुद्धि किन मनुष्यों की होती है–
   (क) जो पोथी-पुराण पढ़े (ग) जो ईश्वर-भक्ति में लीन हो
   (ख) जो धर्म का ज्ञाता हो (घ) जो अच्छा व्यवहार करने वाला हो
4. कबीर की द ष्टि से पंडित किसे कहेंगे ?
   (क) जो राम के प्रेम में डूबा है (ग) जो मंदिर में पूजा-पाठ करता है
   (ख) जो बड़ी-बड़ी पोथियाँ पढ़ चुका है (घ) जो परिवार से प्रेम करता है

2.5 आपने क्या सीखा

1. रैदास द्वारा रचित पदों और दोहों में भक्ति रस का माधुर्य भाव भरा हुआ है, जिन्हें सस्वर गाया जा सकता है।
2. रैदास के पद और दोहे भक्ति भाव से परिपूर्ण हैं। इनमें सदैव इस बात पर बल दिया कि किसी भी कुल में जन्म लेने से कुछ नहीं होता। सच्ची भक्ति मात्र से मानव उच्च श्रेयस्कर पद प्राप्त कर सकता है।
3. ईश्वर-भक्ति ही सच्ची भक्ति है, जब भक्त और ईश्वर में कोई भेद नहीं रह जाता तब ही मनुष्य की भक्ति सार्थक सिद्ध होती है।
4. भक्त और भगवान के संबंध को कवि रैदास ने अलग-अलग ढंग से स्पष्ट करने की चेष्टा की है, जैसे– चंदन-पानी, घन-मोर, दीपक-बाती, मोती-धागा, चाँद-चकोर, सोना-सुहागा आदि।
5. रैदास ने अपनी काव्य रचनाओं में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। जिसमें यत्र-तत्र अवधी की शब्दावली भी है। वैसे आपने जगह-जगह अरबी और फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया है।
6. रैदास ने काव्य की रचनापदों और दोहों के रूप में की। दोहे में दो-दो चरणों के दो-दो दल अर्थात चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों अर्थात् पहले और तीसरे चरण में 13–13 तथा सम चरणों अर्थात दूसरे और चौथे चरण में 11–11 मात्राएँ होती हैं।

2.6 योग्यता विस्तार

(क) कवि परिचय

संत किसी देश या जाति में नहीं, अपितु पूरे मानव समाज की अमूल्य संपत्ति होते हैं। हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे देश के महापुरुष और संत अपने विषय में प्रायः मौन रहे। इससे उनकी गरिमा में सदैव व द्धि ही हुई। यह संसार क्षण भंगुर है, अतः तू माया मोह के जाल में मत फँस। यह तो सैमल के फूल के समान है, जो कुछ दिन खिलकर मुरझा जाएगा। कभी उनके परवर्ती शिष्यों ने उनके विषय में कुछ लिखा, तो कभी जनमानस में प्रचलित जनश्रुतियों से ही उनके जीवन और मूल्यों का कुछ बोध होता है। अनेक ग्रंथों में इनके अनेक नाम प्रचलित हैं, किंतु अधिकतर विद्वानों की मान्यतानुसार इनका नाम रैदास था। कुछ पदों के आधार पर उनकी जाति, कुल, परिवार और निवास की स्थिति का कुछ विवरण मिलता है। भक्तिकाल के अनुसार रैदास रामानंद के शिष्य थे। कई साक्ष्यों के अनुसार कबीर और रैदास समकालीन थे। कबीर उम्र में रैदास से कुछ छोटे थे। अतः ये पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य में हुए होंगे, ऐसा माना जाता है।

रैदास की भक्ति से प्रतिपादित अनेक जनश्रुतियाँ हैं। जैसे मान्यता है कि मीराबाई ने उन्हें अपना गुरु माना था। वे जीवनभर पर्यटन करते रहे और अंत में 1684 में चित्तौड़ में उन्होंने अपनी देह का त्याग किया। संत रैदास ने कुल कितनी रचनाएँ की, यह भी ठीक से ज्ञात नहीं। फिर भी जो उपलब्ध हैं, उनमें – 'रैदास बानी', 'रैदासजी की साखी तथा पद', 'प्रहलाद लीला' आदि प्रमुख हैं।

(ख) कबीर के निम्नलिखित दोहे पढ़िए।

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल।।

कबीर कहते हैं कि मेरे प्रिय लाला की लाली (प्रभाव) चारों ओर व्याप्त है। मैं उनसे मिलने गई तो मैं भी ब्रह्ममय हो गई। अर्थात मेरा ब्रह्म (आत्मा) से मिलन हो गया और जीव ब्रह्म में मिलकर एक हो गए।

यह ऐसा संसार है जैसा सेवा फूल।
दिन दस के ब्यौहार में झूठे रंग न भूल।।

2.7 पाठांत प्रश्न

1. कवि ने ईश्वर की उपमा किन-किन से दी है ? कोई पाँच उदाहरण सहित बताइए।
2. रैदास ने किस आधार पर ईश्वर को निर्गुण माना? पद से उदाहरण देकर अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।
3. ईश्वर भक्ति से सांसारिक व्यक्ति को क्या लाभ मिलता है?
4. *"जिहि कुल साधु बैसनौ होई"* पंक्ति में व्यक्त कवि के भावों को स्पष्ट कीजिए।
5. कवि ने किन व्यक्तियों के यमपुर जाने की बात की है और क्यों ?
6. रैदास ने अपने काव्य में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
7. वर्तमान संदर्भ में रैदास के विचारों की महत्ता प्रतिपादित कीजिए।
8. निम्नलिखित पद को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

   गुरु पैयाँ लागौं राम लखा दीजो रे।
   जनम जनम का सोया मनुवाँ, सबदन मार जगा दीजो रे।।
   घट अँधियार नैन नहिं सूझै, ज्ञान का दीप जगा दीजो रे ।
   बिस की लहर उठत घट अंतर, अमरित बूँद चुवा दीजो रे।।
   गहिरी नदिया अगम बहै धरवा, खेय के पार लगा दीजो रे।
   'धरमदास' की अरज गुसाँईं, अबकै खेप निभा दीजो रे।।

(क) उपरोक्त पद के रचयिता का नाम बताइए।

(ख) *'घट अँधियार नैन नहिं सूझै, ज्ञान का दीप जगा दीजो रे'* से कवि का क्या आशय है?

(ग) पद का मूल भाव क्या है?

(घ) कवि ने *'गहिरी नदिया'* किसे कहा है?

(ङ) कवि को ईश्वर क्या मारकर जगाता है?

2.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 1. (क) 2. (क)

3. (ग) 4. (क)

2.2 1. (क)

2.
चंदन	–	पानी
घन	–	मोर
दीपक	–	बाती
मोती	–	धागा
स्वामी	–	दास
चाँद	–	चकोर
सोना	–	सुहागा

2.3 1. (ग) 2. स्वयं ढूँढ़िए 3. किसी भी परिस्थिति में

2.4 1. और 2. स्वयं कीजिए 3. (ग) अपना कर्म करना और ईश्वर का स्मरण करना।

2.5 1. राम नाम से 2. (ख) 3. (ग) 4. (क)